इकाई 4 राजनीतिक सिद्धांत की संकल्पनाएँ

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 परिचय

4.2 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

4.3 राजनीतिक सिद्धांत की एक परिभाषा के प्रति

4.4 राजनीतिक सिद्धांत में प्रमुख संकल्पनाएं

4.4.1 ऐतिहासिक संकल्पना

4.4.2 नियामक संकल्पना

4.4.3 अनुभवजन्य संकल्पना

4.4.4 समसामायिक संकल्पना

4.5 सारांश

4.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

इस इकाई में राजनीतिक सिद्धांत की अनेक संकल्पनाओं पर चर्चा की गई है। इस इकाई के अध्ययन के बाद आप निम्न पर चर्चा करने में सक्षम हो जाएंगे :

- राजनीतिक सिद्धांत को परिभाषित करने के प्रयास;
- राजनीतिक सिद्धांत की अनेक संकल्पनाएं; और
- राजनीतिक सैद्धांतीकरण पर हाल ही में किए गए प्रयासों का पर्यावलोकन।

4.1 परिचय

इस इकाई का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक सिद्धांत में पायी जाने वाली विभिन्न संकल्पनाओं को समझना है। शुरुआत के तौर पर, यह चर्चा करना आवश्यक है कि राजनीतिक सिद्धांत वह उद्यम है जो विभिन्न आच्छादनों (Shades) और विवरणों जो विश्व के वस्तुतः राजनीतिक जीवन में घटित होते हैं, के राजनीतिक घटनाक्रम के विश्लेषण की माँग करता है। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक सिद्धांत उस विश्व को प्रभावित करता है जिसमें हम रहते हैं और जो हमारी प्राथमिकताओं को प्रभावित करता है। इससे हमें सामाजिक और राजनीतिक जीवन का सुधार करने और उसके बारे में अपनी समझ को परिमार्जित करने में सहायता मिलती है। यह एक अलग मामला है कि सामान्यतः राजनीतिक सिद्धांत के बारे में गलतफहमी है, जो एक राजनीतिक सिद्धांतवादी को ऐसी प्रथक्कृत तथा एकान्तप्रिय सत्ता के रूप में मानती है जो वास्तविक जीवन की समस्याओं की और न्यूनतम ध्यान देती है तथा स्वतः निर्मित ऐसी काल्पनिक दुनिया में रहती है जहाँ प्राणी समाज अथवा राजनीति के सिद्धांतों का मन्थन करता है।

परन्तु तथ्य इससे अन्यथा हैं। राजनीतिक सिद्धांत सदैव उस वास्तविक विश्व में स्थित है जिसके बारे में यह बोलता है, स्वयमेव संबोधित करता है तथा उससे समस्या के समाधान की अपेक्षा करता है। समाज वह धावन मार्ग (Runway) है जहाँ से कल्पना की उड़ान शुरू होती है। अतः सार्वजनिक – राजनीतिक जीवन में लिया सक्रियतावादी प्रशिक्षित राजनीतिक

वैज्ञानिकों के रूप में राजनीतिक सिद्धांत के प्रति महत्त्वपूर्ण योगदान करते है। एक व्यवसाय के रूप में राजनीतिक सिद्धांत उतना ही महत्त्वपूर्ण है, जितना वह वृत्ति के रूप में है तथा उस व्यवसाय का प्रमाण पत्र जो मात्र विद्यमान ही नहीं है, अपितु जिससे ज्ञान भंण्डार समृद्ध हुआ है, प्लैटो से लेकर मार्क्स तक लम्बे विगत काल के लेखकों से प्राप्त किया जा सकता है। व्यवसाय के रूप में राजनीतिक सिद्धांत ''राजनीतिक अनुभव और विचारधारा के बीच जटिल अन्तक्रिया के बारे में हमारे ज्ञान को प्रखर बनाता है'', जैसा कि शैल्डन वोलिन ने अपनी पुस्तक *पॉलिटिक्स* एण्ड *विज़न* में इंगित किया है।

4.2 राजनीतिक सिद्धांत का विकास

राजनीतिक सिद्धांत में विकास सदैव उन परिवर्तनों को प्रतिबिम्बित करता है जो हमारे समाज में होते रहते हैं। राजनीतिक सिद्धांत विभिन्न कालों में उभरने वाली चुनौतियों की प्रतिक्रिया स्वरूप पैदा होते हैं। हेगेल का ''जब अधिकार की छाया का सूत्रपात होता है तब मिनरवा का उल्लू उड़ान भरता है'' के रूप में चरितार्थ राजनीतिक सिद्धांत का प्रतीकात्यक स्वरूप बहुत ही सहज ग्राह्य है।

तथापि, हम भलीभाँति ध्यान दें कि राजनीतिक चिंतन जो सामाजिक परिवर्तनों के परिणामस्वरूप भी उद्‌भूत होती है, समय और स्थान से बँधी हुई है और इसीलिए उस सिद्धांत से भिन्न है जो ऐसे अवरोधों को तोड़ देता है तथा भिन्न स्वरूप और मूल के राजनीतिक घटनाक्रम को समझने और समझाने में अपनी योग्यता सिद्ध करता है। इसका कारण यह है कि सिद्धांत विचारधाराओं और पूर्वाग्रहों से परिष्कृत और परिमार्जित होते हैं तथा उन कतिपय सिद्धांतों पर पहुँचते हैं, जो मात्र कालरहित ही नहीं है, अपितु उन्हें ज्ञान भी पुकारा जा सकता है। राजनीतिक उदारवादी सैद्धांन्तीकरण का पक्ष लेते समय मात्र अपनी सनक और अतिकल्पना की पूर्ति के लिए ही नहीं, अपितु उन सिद्धांतों की तलाश के लिए विचारों का अनुगमन करते हैं जिनकी समझ जीवन को बेहतर बना सकती है। इस उद्यम में सिद्धांतवादी कुल मिलाकर सजीव राजनीतिक स्थिति से अभिप्रेरित होते हैं। राजनीतिक सिद्धांत के इतिहास से पता चलता है कि समष्टियों सैद्धांतीकरण के औज़ारों को किस प्रकार स्निग्ध (smooth) बनाया है, जिसके माध्यम से उनके पीछे विभिन्न मान्यता प्राप्त सिद्धांतों, प्रथाओं और मान्यताओं पर प्रश्नचिन्ह लगा तथा भविष्य के लिए ब्लूप्रिंट तैयार किया गया।

तथापि, यह सत्य है कि सिद्धांत के लिए यह प्रेरणा हमेशा कई प्रकार की विफलता और संबद्ध दोषसिद्धि से प्राप्त होती है कि वस्तुओं को एक उत्कृष्ट समझ के बेहतर बनाया जा सकता है और अन्ततः उनका समाधान किया जा सकता है। इसलिए, राजनीतिक सिद्धांत का कार्य एक उड़ता हुआ जवाब मुहैया कराने तथा एक तालमेल की स्थिति से संतुष्ट रहने तक ही सीमित नहीं है। अपितु इसे समस्या की जड़ तक पहुँचना होता है तथा वैकल्पिक सिद्धांतों के रूप में उसका उपचार तलाशना पड़ता है। इस प्रकार, सिद्धांतवादी मात्र हस्तगत समस्याओं के बारे में ही नहीं, अपितु उनसे परे भी विचार कर सके।

यहाँ हमें राजनीतिक सिद्धांत को कला अथवा कविता से पृथक करना होगा। दर्शन, प्रतिक्रिया और चिंतन के शब्दों में, राजनीतिक सिद्धांत और कला तथा कविता जैसे अन्य रचनात्मक क्रियाकलापों के बीच अधिक अन्तर नहीं है। तथापि, राजनीतिक सिद्धांतवादी और एक कवि के बीच अन्तर यह है कि राजनीतिक सिद्धांतवादी का आवेग और अनुसंधान एक निश्चित स्वरूप के चैतन्य कार्य हैं, जबकि कविता का कार्य एक सहज क्रिया है। अतः यह सृजनात्मकता नहीं है परन्तु चैतन्यता कविता को एक सिद्धांत की प्रास्थिति अनुमत नहीं करती।

4.3 राजनीतिक सिद्धांत की एक परिभाषा के प्रति

राजनीतिक सिद्धांत को विभिन्न व्यक्तियों द्वारा विभिन्न प्रकार से परिभाषित किया गया है। परिभाषाएं इसके मूलभूत संघटकों की प्रबलता और बोध के आधार पर बदल जाती है। सेबाइन की राजनीतिक सिद्धांत की सुप्रसिद्ध परिभाषा है कि यह कुछ इस प्रकार है ''जिसमें तथ्यात्मक, नैमित्तिक और मूल्यात्मक लक्ष्णों वाले घटक होते हैं।'' हैकर के अनुसार, राजनीतिक सिद्धांत ''आवेगहीन तथा तटस्थ क्रियाकलाप है। यह उस दार्शनिकीय तथा वैज्ञानिक ज्ञान का निकाय है जो इस बात की ओर ध्यान दिए बिना कि इसे कब और कहाँ लिखा गया, उस विश्व के बारे में हमारी जानकारी में वृद्धि कर सकता है जिसमें आज हम रहते हैं और कल रहेंगे।''

अतः यह कहा जा सकता है कि राजनीतिक सिद्धांत का हमारा तात्पर्य प्रस्थापनाओं के एक ससक्त (coherent) समूह से है जिसके एक राजनीतिक घटनाक्रम के एक विशिष्ट वर्ग के बारे में कुछ विवेचनात्मक सिद्धांत होते हैं। इसका तात्पर्य है कि चिंतन से अन्यथा सिद्धांत एक निश्चित समय पर कई घटनाओं पर विचार नहीं कर सकता है तथा इसे मात्र मुद्दों के वर्ग अथवा प्रकार से जोड़ना पड़ेगा।

बोध प्रश्न 1

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीतिक सिद्धांत के विकास पर कुछ पंक्तियाँ लिखें।

.....

.....

.....

.....

.....

4.4 राजनीतिक सिद्धांत में प्रमुख संकल्पनाएँ

सिद्धांतकारों द्वारा प्रयुक्त राजनीतिक सिद्धांत की विभिन्न संकल्पनाओं की पहचान करना तथा उन्हें वर्गीकृत करना बहुत मुश्किल है। सिद्धांतकारों के बीच उस अभ्यास की तलाश की प्रवृत्ति से कठिनाई सामने आती है, जिसमें वे विभिन्न संकल्पनाओं और परम्पराओं का अनुमान लगाना आरंभ करते हैं। यह समसामयिक राजनीतिक सिद्धांत के साथ इससे पूर्ववर्ती सिद्धांतों के मुकाबले अधिक सत्य है जैसा कि हम बाद में देखेंगे। विगत समझ में, सिद्धांतकारों ने कुछ सीमा तक सिद्धांत निर्माण में संकल्पना की शुद्धता बनाए रखी थी तथा कभी-कभी अपने चुने हुए, फ्रेमवर्क से भटक जाते थे। परन्तु समसामयिक कालों में यह लागू नहीं होता है, जो उस सिद्धांत की फसल के साक्षी हैं जो स्वभावतः मिश्रित किस्म की प्रतीत होती हैं।

परन्तु व्यापक तौर पर, राजनीतिक सिद्धांत में तीन भिन्न संकल्पनाएँ सामने आती हैं जिनके आधार पर विगत और वर्तमान सिद्धांतों को संकल्पित, न्यायनिर्णीत और मूल्यांकित किया जा सकता है। ये सिद्धांत हैं : ऐतिहासिक, नियामक और अनुभवजन्य।

4.4.1 ऐतिहासिक संकल्पना

कई सिद्धांतकारों ने अन्तर्दृष्टि और ऐतिहासिक संसाधनों के आधार पर सिद्धांत-निर्माण का प्रयास किया है। सेबाइन ऐतिहासिक संकल्पना के एक प्रमुख भाष्यकार हैं। उनके मतानुसार, राजनीतिक सिद्धांत का स्वरूप क्या है जैसे प्रश्न का उत्तर विस्तार से दिया जा सकता है, अर्थात अमुक सिद्धांत ने ऐतिहासिक घटनाओं और विशिष्ट स्थितियों में प्रतिक्रिया की है। दूसरे शब्दों में, राजनीतिक सिद्धांत इस परिप्रेक्ष्य में उसे स्थिति-आश्रित हो गए हैं, जिसमें प्रत्येक ऐतिहासिक स्थिति एक समस्या की जनक है जिसका सिद्धांत द्वारा दिए गए समाधानों के माध्यम से निदान किया जाता है।

राजनीतिक सिद्धांत की यह परिकल्पना परंपरा से हटकर है। कॉब्बन भी मानते हैं कि परंपरागत संविधि जिसमें ऐतिहासिक बोध पूर्णता को प्राप्त होता है, राजनीतिक सिद्धांत की समस्याओं पर विचार करने का सही तरीका है।

यह सत्य है कि विगत, सिद्धांत-निर्माण के हमारे प्रयास में एक मूल्यवान मार्गनिदेर्शक के रूप में कार्य करता हैं और हमें सिखाता है कि हम अपनी मौलिकता के बारे में अत्यधिक आश्वस्त न हो। इससे यह संकेत भी मिलता है कि साधनों पर प्रकाश डालने के अतिरिक्त उन तरीकों से भिन्न विचार करना संभव है जो प्रचलित और प्रमुख हैं। ऐतिहासिक जानकारी हमें विगत पीढ़ियों की विफलताओं का भी बोध कराती है तथा उन्हें वर्तमान सामूहिक जानकारी से जोड़ती है तथा हममें कल्पनाशीलता का संचार करती है।

इसके अतिरिक्त, ऐतिहासिक संकल्पना हमारे नियामक दर्शन में भी महत्त्वपूर्ण योगदान करती है। वैचारिक इतिहास से हमें पता चलता है कि हमारी सामाजिक और राजनीतिक दुनिया उन वस्तुओं का उत्पाद है जिनकी जड़ें विगत में समाई हुई हैं। उनकी बेहतर जानकारी से हमें पता चलेगा कि किस प्रकार हमारे कतिपय मूल्य, मानदण्ड और नैतिक अपेक्षाएँ हैं और वे कहाँ से हमें प्राप्त हुए हैं। हमारे इस बोध के साथ यह संभव है कि हम इन मूल्यों की जाँच करें तथा समीक्षात्मक तौर पर उनकी उपयोगिता का निर्धारण करें।

परन्तु इस संकल्पना पर अन्य विश्वास मूर्खता से रहित नहीं है। राजनीतिक सिद्धांत नामक परियोजना की उत्कृष्टता यह है कि यह प्रत्येक स्थिति में अनोखा तथा पहेलियों से भरा हुआ है। इस प्रकार, विगत की योग्यता कभी-कभी अनावश्यक होती है, तथा यदि कोई इस पहलू से असावधान है तब यह बाधा भी बन जाती है। अतः एक निश्चित सार से परे राजनीतिक सिद्धांत में इस अभिगम की उपयोगिता संदिग्ध है, क्यों कि यह सदैव अप्रचलित काल के अप्रचलित विचारों से जुड़ा होता है। इन विचारों के सुग्राह्य मूल्य बने रहते हैं परन्तु सैद्धांतिक कार्य पर्याप्त स्थिति में आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

4.4.2 नियामक संकल्पना

राजनीतिक सिद्धांत में नियामक संकल्पना विभिन्न नामों से जानी जाती है। कुछ लोग इसे *दार्शनिकीय सिद्धांत* कहना पसन्द करते हैं तथा कुछ अन्य इसे *नीतिविषयक सिद्धांत* के रूप में प्रस्तुत करते हैं। नियामक संकल्पना इस विश्वास पर आधारित है कि विश्व और उसके अनुभवों की सहायता से तर्क, प्रयोजन और परिणाम के संदर्भ में विवेचना की जा सकती है। दूसरे शब्दों में, यह मूल्यों के बारे में दार्शिनिकीय अटकलबाजी का मूर्त रूप है।

आदर्शवादी प्रश्न करेंगे कि राजनीतिक संस्थाओं का क्या परिणाम होगा? व्यष्टि और अन्य सामाजिक संगठनों के बीच संबंध को क्या नाम दिया जाएगा? समाज में कौन से प्रबन्ध प्रतिदर्श अथवा आदर्श हो सकते हैं तथा यह किन नियमों और सिद्धांतों द्वारा विनियंत्रित होंगे।

कोई यह कह सकता है कि उनके चिन्तन नैतिक हैं और प्रयोजन, एक आदर्श स्वरूप का निर्माण करना है। इस प्रकार ये वे सिद्धांतकार है, जिन्होंने हमेशा अपनी सशक्त कल्पना के माध्यम से राजनीतिक विचारों के क्षेत्र में 'राम राज्य' की कल्पना की है।

नियामक राजनीतिक सिद्धांत प्रबलता से राजनीतिक दर्शन के प्रति प्रवृत्त है, क्योंकि यह उससे बेहतर जीवन का ज्ञान प्राप्त करता है तथा उसे निरपेक्ष मानदण्डों के सृजन के लिए अपने प्रयास में फ्रेमवर्क के रूप में भी प्रयोग करता है। वस्तुतः, सैद्धांतीकरण के इसके यंत्र राजनीतिक दर्शन से उधार लिए गए हैं और इसीलिए, यह संकल्पनाओं के बीच अन्तर्संबंध स्थापित करने की माँग करता है तथा घटनाक्रम और सिद्धांत में ससक्तता की तलाश करता है जो दार्शिनिकीय दृष्टिकोणों के प्रतीकात्मक उदाहरण हैं।

लियो स्ट्रौस ने नियामक सिद्धांत के मायने की ज़ोरदारी से वकालत की है और तर्क दिया है कि राजनीतिक वस्तुएँ स्वभावतः अनुमोदन अथवा अनुमोदन के अध्याधीन होती हैं तथा उन्हें अच्छे अथवा बुरे तथा न्यायसंगत अथवा अन्यायपूर्ण से अन्यथा किसी अन्य संदर्भ में निर्णीत करना कठिन है।

परन्तु आदर्शवादियों की समस्या यह है कि वे अपने द्वारा पोषित मूल्यों का दावा करते समय उन्हें सार्वभौमिक एवं निरपेक्ष चित्रण करते हैं। वे यह महसूस नहीं करते हैं कि भलाई के लिए निरपेक्ष मानक के सृजन की उनकी उत्कृष्ट इच्छा दोष रहित नहीं है। नीति विषयक मूल्य समय और स्थान के प्रति सापेक्ष हैं जो उनमें प्रचुर व्यक्तिपरकता का प्रतीक है तथा निरपेक्ष मानक के किसी सृजन की संभावना को व्यक्त करता है। यह याद रखना हमारे लिए अधिक श्रेयस्कर होगा कि एक राजनीतिक सिद्धांतकार भी विश्व के निर्धारण में एक सापेक्ष उपस्कर (Instrument) है तथा ये सूक्ष्मदृष्टियाँ कई घटकों से प्रतिवांछित होते हैं जो स्वरूप में चिंतन की प्रतीक हैं।

अनुभवजन्य सिद्धांत के भाष्यकार आदर्शवादियों को (क) मूल्यों की सापेक्षता (ख) नीतियों और मानदण्डों के सांस्कृतिक आधार (ग) उद्यम में सैद्धान्तिक घटक तथा (घ) प्रायोजना के निरपेक्ष एवं आदर्श स्वरूप का उत्तरदायित्व सौंपते हैं।

यह सत्य है कि नियामक संकल्पना के प्रायोजक सिद्धांत की आन्तरिक सहवर्तिता (internal consistency) के बारे में पूछताछ से पूर्वाग्रस्त होते हैं जो अविवेकशील रहते हुए तथा कभी-कभी विद्यमान सामाजिक और राजनीतिक वस्तुस्थिति की अनुभवजन्य जानकारी न होने पर भी अधिकांशतः विचारों के स्वरूप तथा तरीके की दृढ़ता से जुड़ी होती है। यह और पीड़ादायक और कष्टकारी है जब किसी को पता चलता है कि उनके बीच यह प्रवृत्ति किसी अन्य संलक्षण से सहयोजित है, जिसके तहत वे एक सिद्धांतकार को जवाब देना चाहते हैं तथा उस अनुभवजन्य वास्तविकता जो उनके सामने घूर रही है, से अपनी आँखें चुराते हुए मात्र अपने कार्य की समीक्षा करते हैं। इस प्रकार, यह उच्च और उत्कृष्ट नियामक चिन्तन के नाम पर सिद्धांत-निमार्ण में एक भ्रामक और कपटपूर्ण प्रयोग बनकर रह जाता है।

परन्तु लम्बे विगत में जो नियामक सिद्धांत के प्रतिष्ठिता रहे, उन्होंने हमेशा अपने सिद्धांतों को अपने काल की वस्तुस्थिति के ज्ञान से जोड़ने की कोशिश की। अतः, विगत में सभी नियामक उद्यम प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष अनुभवजन्य प्रमाणों से पूर्ण थे तथा प्लैटो का न्याय का सिद्धांत इसे प्रदर्शित करने के लिए एक अच्छा उदाहरण हो सकता है।

हाल ही में पुनः नियामक सिद्धांत के भीतर पुराना प्रबोधन (sensibility) उभरकर सामने आया है तथा बेहतर जीवन और बेहतर समाज के लिए भावातिरेक का प्रणालीगत और अनुभवजन्य चतुरता से मिलान किया गया है। इस मुद्दे पर जॉन रॉल्स की पुस्तक *थ्यौरी*

ऑफ जस्टिस एक ऐसा मामला है जो तर्कपूर्ण और नैतिक राजनीतिक सिद्धांत को अनुभवजन्य उपलब्धियों में संरक्षण प्रदान करने का प्रयास करता है। रॉल्स अपनी कल्पना से नियामक दार्शनिकीय दलीलों को व्यष्टिवाचक न्याय और हितकारी राज्य के बारे में वास्तविक विश्व प्रतिष्ठानों से जोड़ने के लिए ''मूल स्थिति'' का सृजन करते हैं। कुछ अन्य सिद्धांन्तकार भी समानता, स्वतंत्रता और लोकतंत्र के बारे में उन्हें प्रतिदिन के चिन्तन में आरोपित करके तथा उन्हें विशिष्ट स्थितियों के साथ जोड़कर नैतिक सिद्धांतों में विकसित करने के कार्यों में लगे हुए हैं।

नई पीढ़ी के कुछ नियामक सिद्धांतकारों ने भी सिद्धांत की सुविज्ञ प्रवृत्ति को निराकृत करना आरंभ कर दिया है जो पुराने दिनों के स्वरूप का है, जिसके तहत या तो विद्यमान प्रबन्धनों के लिए उन्हें प्रचुर न्याय की पेशकश की गई थी अथवा वे उनकी समालोचना करने में संकोचग्रस्त रहे तथा इस प्रकार अपनी चिंतन में यथापूर्व स्थिति के स्तर पर बने रहे। अब समालोचना सिद्धांत के रूप में ज्ञात एक नया सिद्धांत उजागर हुआ है जो नियामक प्रायोजना के अंग के रूप में राजनीतिक घटनाक्रम से जुड़ा हुआ है तथा विचारों को व्यवहार से जोड़ने की कोशिश करता है तथा समाज एवं राजनीति में बेहतर स्थिति के लिए परिवर्तनों को सहज बनाने के लिए प्रभावी अवरोध भी लगाता है।

4.4.3 अनुभवजन्य संकल्पना

बीसवीं शताब्दी में वर्चस्व कायम करने वाला राजनीतिक सिद्धांत नियामकवादी नहीं है, अपितु अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत के रूप में ज्ञात एक अन्य संकल्पना है जो अनुभवजन्य प्रेक्षणों से सिद्धांतों को प्राप्त करती है।

अनुभवजन्य राजनीतिक सिद्धांत उन सिद्धांतों को अंगीकार नहीं करता है जो मूल्य निर्धारणों में अंर्तग्रस्त हैं। अतः स्वाभाविक तौर पर नियामक राजनीतिक सिद्धांत अभिमतों और प्राथमिकताओं की मात्र विवरणी के रूप में मूर्तिमान है।

राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र को वैज्ञानिक और उद्देश्यपरक बनाने के लिए मूल्य-मुक्त सिद्धांत के लिए आन्दोलन की शुरुआत हुई जो क्रियाशीलता हेतु एक अधिक विश्वास दिशानिर्देशक था। इस नई अवस्थिति को *प्रत्यक्षवाद* के रूप में जाना गया।

प्रत्यक्षवाद के आकर्षण के तहत, राजनीतिक सिद्धांतकारं ने ऐसे सिद्धांत के आधार पर राजनीतिक घटनाक्रम के बारे में वैज्ञानिक जानकारी प्राप्त करने में लग गए, जिसे अनुभवजन्य तौर पर सत्यापित एवं सिद्ध किया जा सकता था और इस प्रयास में दर्शन विज्ञान का मात्र अनुबद्ध बनकर रह गया। सिद्धांत के इस जोड़-तोड़ ने एक ऐसे निःस्पृह पर्यवेक्षक के रूप में सिद्धांतकार की भूमिका का भी चित्रण किया जो सभी वचनबद्धताओं से परिमार्जित तथा सभी मूल्यों से रहित हो।

राजनीतिक सिद्धांत में यह प्रायोजना ज्ञान के उस अनुभवजन्य सिद्धांत पर आधारित थी, जो यह परीक्षण करने के लिए कि क्या सच है और क्या झूठ अपने पास पूर्ण सक्षम मानदण्ड पाए जाने का दावा करता है। इस मानदण्ड का निचोड़ सिद्धांत के परीक्षण और सत्यापन में निहित है।

जब राजनीतिक सिद्धांत इस प्रभाव के तहत आगे बढ़ रहा था, एक तथाकथित क्रांति का प्रादुर्भाव हुआ जो 'व्यवहारमूलक क्रांति' से नियंत्रणकारी स्थिति में पहुँच गई और इसने अध्ययन और अनुसंधान के संपूर्ण क्षेत्र को नए अभिलक्षणों का समर्थन करने अपनी गिरफ़्त में ले लिया। इसमें सम्मिलित था : (क) विश्लेषण में प्रभावात्मक तकनीक को प्रोत्साहन

(ख) नियामक फ्रेमवर्क की समाप्ति तथा अनुभवजन्य शोध को बढ़ावा देना जो सांख्यकीय परीक्षणों के प्रति सुग्राहय हो सकती है (ग) वैचारिक इतिहास की अस्वीकृति और उसका बहिष्कार (घ) सूक्ष्म-अध्ययन पर ज़ोर क्योंकि यह अनुभवजन्य व्यवहार के प्रति अधिक सहज अनुगामी था (ड़) निशिष्टीकरण का गुणगान (च) व्यष्टि के व्यवहार से आंकड़ों की प्राप्ति तथा (छ) मूल्य-मुक्त शोध के लिए तीव्र चाह।

वस्तुतः, व्यवहार मूल्य वातावरण एक सिद्धांत-विरोधी स्थिति से अतिप्रभावित हुआ। यह उनके लिए अनुकूल सिद्ध हुआ जिन्होंने परम्परागत अर्थ में सिद्धांत को परिष्कृत किया। सिद्धांत का व्यंग्यचित्र *बनाया गया* तथा उसे चिंतन, अमूर्तपद, अधिमानसिका तथा आदर्श राज्य का पयार्य बनाया गया। कुछ दुस्साहसियों ने सिद्धांत को उद्यम के रूप में विदा करने का समर्थन भी किया।

तत्पश्चात्, जब *तर्कसंगत प्रत्यक्षवाद* प्रत्यक्षवाद के पुनः जीवनप्रद अवतार के रूप में दृष्टिगोचर हुआ तथा इसके पदक्रम में विटजेन्सटीन जैसे भारी-वजनदार शामिल थे, दृष्टिकोण में कोई अधिक अन्तर नहीं आया। एक मात्र अन्तर यह था कि प्रत्यक्षवादी राजनीतिक सिद्धांत के क्षेत्र को वैज्ञानिक बनाना चाहते थे, जबकि तार्किक प्रत्यक्षवादियों ने इसे अमूर्तरूप तथा अयुक्तसंगत घोषित कर दिया और इसलिए यह वैज्ञानिक ज्ञान के दायरे से बाहर था।

परन्तु यह अवस्था लम्बे समय तक नहीं रही क्योंकि संपूर्ण जानकारी त्रुटिपूर्ण थी। यहाँ तक कि उद्देश्यपरक जानकारी प्राप्त करने के जोश में, उन्होंने चिंतन को वास्तविकता के एक पहलू में बदल दिया तथा चिंतन और वास्तविकता के बीच सुस्पष्टता को अस्पष्ट कर दिया। इस प्रकार, वे शीघ्र ही विज्ञान के कुछ दार्शनिकों की ईर्ष्या और क्रोध का भाजन बने जिन्होने विज्ञान के प्रति अनुवर्ती - प्रत्यक्षवादी अभिगम हेतु एक दर्शन प्रस्तुत किया। कार्ल पॉपर ने वैज्ञानिक ज्ञान के मानदण्ड के रूप में 'मिथ्याकरण' का सिद्धांत अवधारित करके एक नई स्थिति को जन्म दिया तथा तर्क दिया कि सभी ज्ञान अनुमान विषयक अस्थायी था तथा सत्य से पर्याप्त दूरी पर था। विज्ञान के दर्शन में वास्तविक मोड़ अथवा सफलता का क्षण वह था, जब थॉमस कुन, इमरे लाकाटोस तथा मैरी हैसे ने तथाकथित उस वैज्ञानिक सिद्धांत की निन्दा की जो राजनीतिक सिद्धांत का सर्वनाश कर रहा था तथा एकीकृत विज्ञान की धारणा का बहिष्कार करके प्रत्यक्षवासी आदर्श की साख समाप्त कर दी और इसे प्राकृतिक वैज्ञानिक व्यवहार की अनुचित जानकारी के रूप में घोषित किया। इसका निचोड़ अथवा तर्क यह था कि विज्ञान मानवीय, क्रियाकलापों के रूप में उन विवेचनाओं से अनुप्राणित था जो सार्थकता, संचार तथा स्पष्टता से युक्त था।

कुन की पुस्तक *द स्ट्रक्चर ऑफ साइंटिफिक रिवॉल्यूशन* ने प्रत्यक्षवादी सिद्धांत की कमियों और विफलताओं के प्रत्यक्षीकरण में अग्रणी की और इसमें दर्शाया कि सभी मान्यताएँ जानकारी और अंतर-विषयक संचार के साधन के रूप में विवेचना पर निर्भर थीं। कुन ने प्रबलता से तर्क दिया कि यह मात्र उपयुक्त संगत समागम नहीं थे जो सार्थक फ्रेमवर्क के गठन के पीछे प्रच्छन्त स्थिति में थे, अपितु विवेचना और समालोचना द्वारा निर्मित युक्ति संगत संभाषायें के माध्यम से भी सूचित किये गए थे।

इस प्रकार इस नए कुन्हिआनी परिप्रेक्ष्य ने विज्ञान के दर्शन में नए आधार जोड़े और ज्ञान और सिद्धांत की प्रत्यक्षवादी अटकलबाजी को तीव्र आलोचना और संतीक्षा के दायरे में खड़ा कर दिया। परन्तु 'सामाजिक विज्ञान दर्शन' को पिछड़ना नहीं था, अतः शीघ्र ही नया विचारमंथन आरंभ हुआ जिसने जानकारी से जुड़ी हुई समस्या को जाँच के तहत ला दिया तथा जो इस समस्या को एकीकृत विज्ञान के फ्रेमवर्क के भीतर सुलझाने के प्रयास में जुट गया।

पीटर विंच, एल्फ्रेड शुटज़ तथा चार्ल्स टेलर ने इस नए परिप्रेक्ष्य की उद्घोषणा की और सुझाव दिया कि सामाजिक विज्ञान में जानकारी समस्याओं से ग्रस्त थी तथा उनमें दो समस्याओं को विशेष ध्यान की आवश्यकता थी : (क) सभी विज्ञान विवेचनात्मक जानकारी का स्वरूप है और इसलिए सभी जानकारियों का सिद्धांतमय स्वरूप होता है (ख) सामाजिक विज्ञान का उद्देश्य विशिष्ट रूप से वस्तुपरक है, जिसका तात्पर्य ऐसे अभिकर्त्ता से है जो स्वयं विवेचनाशील सामाजिक प्राणी है। अतः इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, सामाजिक विज्ञान की समस्या 'दुहरे विवेचन' के साथ सिहरन पैदा करती है।

इस नए अभिगम से जानकारी, विवेचना और इस मुद्दे की समस्या सामने उठाई गई कि विषय के प्रतीकात्मक विश्व को चर्चा में किस प्रकार लाया जाए। इसने राजनीतिक सिद्धांतकारों की विवेचनात्मक प्रयोजना में प्रतीकात्मक विश्व के प्रति संवेदनशील बनाकर नए अर्थ के लिए भी उत्प्रेरित किया। इस प्रकार मात्र अर्थ का बोध ही समस्याग्रस्त नहीं अपितु उन्हें समझाने का मुद्दा प्रभावित हुआ। यह हमें मैक्स वैबर की याद दिलाता है, जिन्हों 'नैमित्तिक पर्याप्तता' और 'अर्थ की पर्याप्तता' के अपने वर्गीकरण के माध्यम से इस समस्या के साथ लम्बे समय तक संघर्ष किया।

बोध प्रश्न 2

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) राजनीतिक सिद्धांत की अनुभवजन्य और नियामक संकल्पनाओं के बीच अंतर स्पष्ट करें?

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.4.4 समसामायिक संकल्पना

राजनीतिक सिद्धांतों द्वारा बाधित भूभाग और समसामाजिक कालों में उनके द्वारा नियोजित सैद्धांतिक उपकरणों को चित्रित करना एक यथार्थ चुनौती है। यह चुनौती कई स्रोतों से झलकती है। समकालीन राजनीतिक सिद्धांत वर्गीकरण की आम वर्ग द्वारा स्वीकृत श्रेणी का स्पष्टतः अनुगमन नहीं करता है, नामतः ऐतिहासिक, नियामक और अनुभवजन्य तथा यह पूर्ववर्ती सिद्धांतवादियों के सिद्धांतों की तरह विशेष परम्परा के भीतर भी नहीं टिकता। कभी-कभी वे अपने उद्यम में विभिन्न संकल्पनाओं का प्रयोग करते हुए तथा उस तरीके से उनका नियोजन करते हुए प्रतीत होते हैं जो पहले नहीं देखा गया। राजनीतिक सिद्धांत में पूर्ववर्ती प्रायोजनाओं के सीमांकन के प्रतिक्रिया स्वरूप सैद्धान्तीकरण में वृद्धि हुई है, जिनमें अधिकांश दो महान परम्पराओं के अन्तर्गत आती है, नामतः उदारवाद और मार्क्सवाद तथा जो उन पर चुनिन्दा आधार पर उनसे भवन निर्माण के दौरान, वे राजनीतिक अन्वेषण के लिए नए आधारों की खोज करते हैं तथा नए स्थलों का सृजन करते हैं और राजनीति के सिद्धांतों की शोध और स्थापना के लिए नए उपकरणों को भी जन्म देते हैं। तथापि, राजनीतिक सिद्धांत पर समकालीन प्रायोजना राजनीतिक सिद्धांत नामक व्यापार के दायरे

से परे नहीं जाती, जैसा पहले चर्चा की जा चुकी है, अर्थात ऐतिहासिक, नियामक और अनुभवजन्य संकल्पनाऐं, परन्तु उनके नियोजन की विधि स्वरूप में कुछ दोगलापन लिए रहती है।

समकालीन राजनीतिक सिद्धांत बौद्धिक पर्दे पर 1980 के दशक में प्रकट हुए, जिनमें से अधिकांश सिद्धांत प्रतिष्ठित परम्पराओं के विरुद्ध प्रतिक्रियास्वरूप थे और उन्होंने तर्क और विज्ञान जैसी उन बौद्धिक श्रेणियों को सामने रखा जिनसे वे बँधे हुए थे, जिसने कई पहलुओं को जन्म दिया जो राजनीतिक सिद्धांत द्वारा जाँचाधीन सत्य के आधार के रूप में प्राप्त हुए थे और जिन्होंने नए सामाजिक और राजनीतिक ब्रह्माण्ड को समझने और उसकी कल्पना करने के लिए नए सिद्धांतों को आधारित करने की शुरुआत की, जिनमें से कुछ ''आधुनिक स्थिति के बाद'' की स्थिति में रखे गए।

यह सत्य है कि राजनीतिक सिद्धांत में समकालीन लेखकों की संबद्धता आलोचनात्मक रही है, बल्कि समान रूप से रूपांतरकारी, कल्पनात्मक अथवा दर्शनात्मक। यद्यपि समकालीन समय में ''नए सामाजिक आन्दोलनों'' को समाज के रूपांतरण और नई स्थिति की व्यक्तियों पर काबू पाने के नाम पर इनमें से कई सिद्धांतकारों को नैतिक और बौद्धिक समर्थन दिया गया है।

तथापि, एक व्यापक विश्लेषण के तहत आज विभिन्न सैद्धांतिक प्रवृत्तियों को दृष्टिगोचर करना स्वेच्छाचारी होगा। उदाहरणार्थ, साम्प्रदायवाद और बहुसंस्कृतिवाद को एक साथ लेकर निर्माणवाद और आधुनिकतावाद के बाद की स्थिति पर चर्चा करना उनके प्रति तथा उनके चिन्तनों और वचनबद्धताओं के प्रति बौद्धिक अतिवादिता मानी जाएगी। क्योंकि उनके इतिहास, उनके नियामक चिन्तन तथा सैद्धांतिक उपकरण और अनुभवजन्य हवालाकारों में महत्त्वपूर्ण असमानता तथा दिक्परिवर्तन है। परन्तु फिर भी कोई भी उस सैद्धांतिक भूभाग को रंखांकित कर सकता है, जिस पर राजनीतिक सिद्धांत से उनकी संबंधता उजागर होती है।

कई समकालीन सिद्धांतकारों और उनके सिद्धांतों को साथ-साथ निम्न व्यापक प्रबल वर्गों में रखा जा सकता है :

1) **सार्वभौमवाद का विरोध**

समसामाजिक कालों में राजनीतिक सैद्धांतीकरण ने विगत वर्षों के राजनीतिक सिद्धांत के सार्वभौमिक दावों को, उन परम्पराओं जिनसे वे जुड़े हुए थे, की और ध्यान दिए बिना, समालोचनात्मक संतीक्षा के तहत लाने का प्रयास किया है उन्हें उदारवादी सार्वभौमवाद सामाजिक और तौकिक संदर्भ से वंचित था और उनके मतानुसार पाश्चात्य समाज के अनुभव के आधार पर गुप्त ''विशिष्टतावाद'' ने सार्वभौमिक मूल्यों और मानदण्डों के रूप में छद्मवेश धारण किया है। वे तर्क देते हैं कि सार्वभौमिक सिद्धांतों की अपील मानकीकरण के समतुल्य है और इस प्रकार उस न्याय का उल्लंघन होता है जो विशिष्ट समुदाय अथवा जीवन के स्वरूप में छिपा हुआ है तथा जो अपने निजी मूल्यों और नियामक सिद्धांतों का प्रतीक है। विद्यमान काल में साम्प्रदायिकतावाद सिद्धांतों और बहुसंस्कृतिवादी सिद्धांतों ने इसे पूरी तरह बलपूर्वक विशिष्ट रूप से उजागर किया है तथा इन तथा इन तथाकथित सिद्धांतों को मूल रूप में ''अपवार्जित'' के रूप में पुकारा है, जिसने 'अच्छाई' के एक दर्शन को हमेशा मानवता के एक मात्र दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया है।

मजे की बात यह है कि इस प्रकार के राजनीतिक सिद्धांत ने नियामक विश्व के दृष्टिकोण की निन्दा नहीं की है, परन्तु उन्होंने यह आपत्ति उठाई है कि आरंभ में राजनीतिक सिद्धांत ने अपना मूल्य निर्णय ''वास्तविकतावादी'' शब्दों में व्यक्त किया तथा सापेक्ष मूल्यों से अलग

रखा। इस प्रकार, उन्होंने सामाजिक और राजनीतिक जीवन में सत्य का बलिदान किया। अतः ये सिद्धांत राजनीतिक सिद्धांत की नियामक श्रेणी जैसे न्याय, स्वतंत्रता और लोकतंत्र को विखण्डित करने तथा उन पर निर्णय की प्राथमिकता देने अथवा एक पर दूसरे का वर्चस्व कायम करने से अलग रहने की माँग करते हैं। पश्च-संरचनावादी और पश्च-आधुनिकतावादी इस प्रक्रिया मे लिप्त रहते हैं।

2) **महान आख्यानों की समालोचना**

उदारवादी और मार्क्सवादी, दोनों प्रकार के महान आख्यान इस आधार पर निन्दाग्रस्त हुए हैं कि यहाँ सत्य और वास्तविकता का अति मेहराबदार और अस्पष्ट आधार है। कुछ समकालीन सिद्धांतों को राजनीतिक सिद्धांत में सभी द्वारा भलीभाँति स्वीकृत आधारों नामतः अन्य, संप्रभुता और सत्ता के सतत- विरोध के कारण 'आधार-विरोधी' घोषित कर दिया गया है। निष्पक्ष रूप से देखें तो वे अस्पष्ट आधारों के अलावा अन्य आधारों को अस्वीकार नहीं करते हैं।

महान आख्यानों पर आक्रमण करने वालों में पश्च-आधुनिकतावादी मुकाबले पर हैं और तर्क देते हैं कि उद्देश्यपरक पूर्व-प्रदत्त वास्तविकता अथवा उद्देश्यपरक सामाजिक समर्थन किया जा सके। उनका मत है कि यह 'उद्देश्यवादी संभ्रम' के अलावा कुछ देते हैं, जो इसे वस्तुपरक विवेचन के लिए युक्त करती है। हमें यह भली भाँति याद होगा कि पश्च-संरचनावादी और पश्च-आधुनिकतावादी एक बार राजनीतिक सिद्धांत में अत्यधिक लोकप्रिय ''संरचनात्मक'' तर्क से अपने को समकालीन (आन्तरिक में स्थिति), सार्वभौमिक और कालरहित थी और इस प्रकार ऐतिहासिक नहीं थी। इसके स्थान पर वे 'संभाषण' नामक संरचना की नई धारणा का नियोजन करते हैं जो स्वरूप से समकालीन (समय में स्थित), ऐतिहासिक और सापेक्ष है।

3) **पश्च-प्रत्यक्षवाद**

यह सामाजिक विज्ञान में मूल्य तटस्थता वाली आरंभिक विनियोजन के रूपसादृश्य है जो एक बार राजनीतिक सिद्धांत में व्यवहारवादियों के वर्चस्व में था। समकालीन सिद्धांत मूल्य युक्त उद्यमों को निरर्थक मानते हैं और विश्वास करते हैं कि राजनीतिक सिद्धांत आन्तरिक रूप से नियामक तथा राजनीतिक रूप से विनियोजित प्रायोजना है जिससे भविष्य के लिए निर्देशन और एक दर्शन के प्राचुतीकरण की अपेक्षा की जा सकती है।

4) **अनुभवजन्य और प्रतिस्पर्धात्मक**

समकालीन सिद्धांन्तकारों में पश्च-प्रत्यक्षवादी सोच उन्हें, किसी प्रकार के सामान्यीकरण का प्रयास किए जाने से पहले, अनुभवजन्य और प्रतिस्पर्धात्मक अभिगमों के लिए आवश्यकता की वकालत करने से नहीं रोकती है। बहुसंस्कृतिवाद एक वैसा ही उदाहरण है, जो इस संदर्भ में संवेदन शील है। वस्तुतः, इस प्रकार की अनुभवजन्य-प्रतिस्पर्धात्मक पद्धति संस्कृतियों और उनके संघटकों पर व्यापक सामान्यीकरण के ऊपर एक नियंत्रण के रूप में होगी।

नई सूक्ष्मदृष्टियों के बावज़ूद जो सामाजिक सिद्धांत से उद्भूत होती हैं, उन्हें कई कमज़ोरियों को सामना करना पड़ता है। उत्कृष्ट राजनीतिक सिद्धांत से अलग, अभी तक कोई प्रतिस्पर्धात्मक-अनुभवजन्य सोच नहीं है तथा सिद्धांतकारों के बीच अन्य सिद्धांतकारों से उधार लेने की प्रकृति प्रचुर मात्रा में है। नियामक उद्यम तभी उपयोगी हो सकता है जब इसे वास्तविकता से जोड़ा जाए। अतः वास्तविक चुनौती नियामक सिद्धांत को समाज और

राजनीति की अनुभवजन्य वास्तविकता के मुकाबले धराशायी करने में संनिहित है। यही एक मात्र मार्ग है जहाँ एक वैध राजनीतिक सिद्धांत मात्र सामान्यीकरण से प्रकट हो सकता है, जो पश्च-उदारवादी परिप्रेक्ष्य तथा सापेक्षता और विसरण की इसकी कमज़ोरी के उस सीमांकन पर भी काबू पाएगा जो राजनीतिक प्रायोजनाओं के लिए हमेशा शक्तिशाली है। यह फलीभूत हो सकता है, जैसा कि शैल्डन वोलिन इसे 'महासिद्धांत' मानते हैं।

बोध प्रश्न 3

नोट : i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए रिक्त स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तरों के सुझावों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) कुछ व्यापक मान्यताओं पर चर्चा करें जो समकालीन सिद्धान्तकारों को एक साथ ले आते हैं।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

4.5 सारांश

चूँकि हमारे पास राजनीतिक सिद्धांत की विभिन्न संकल्पनाएँ हैं, वे विभिन्न परंपराओं से विभिन्न प्रकार के अर्थ निकालते हैं। हमने देखा है कि राजनीतिक सिद्धांत क्यों जन्म लेता है और राजनीति में मानवीय अवरोधों को सहज बनाकर इतिहास में किस प्रकार स्वरूप ग्रहण करता है और निर्माण होता है। सिद्धांतकारों द्वारा निर्णीत विभिन्न संकल्पनाएँ क्या हैं जिन पर चर्चा की गई है तथा उनकी कमियों को उजागर किया गया है। समकालीन उद्यम जो राजनीतिक और सामाजिक वास्तविकता की जानकारी में नए द्वार खोलने का दावा करते हैं, उनकी सीमाओं के साथ चर्चा का विषय रहें हैं। पूर्वर्ती चर्चा से स्पष्टतौर पर उभरता है कि राजनीतिक सिद्धांत नाम प्रयोजना में दर्शन और विज्ञान एक दूसरे को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते, यदि मानवता के उद्धार के लिए दर्शन एक लक्ष्य है और यह कि उद्देश्य परक 'अच्छाई' अथवा उद्देश्य परक 'सत्य' नामक किसी भी वस्तु के न होने पर भी, सिद्धांत के लिए व्यवहारिक आधार का प्रयास किया जाना चाहिए। यह मात्र वांछनीय नहीं है, अपितु अधिप्राप्ति योग्य है। राजनीतिक विज्ञान में कोई परियोजना जो अनुभवजन्य उपलब्धियों को कड़ी आलोचना के अध्याधीन नियामक चिंतन से जोड़ती है, राजनीतिक सिद्धांत में सृजन के द्वारा खोल सकता है जिसके आधार पर हम भविष्य में आगे बढ़ सकते हैं।

4.6 कुछ उपयोगी पुस्तकें

शैल्डन बोलिन, *पॉलिटिक्स ऐंड विज़न : कंटीन्यूटी ऐंड इनोवेशन इन वैस्टर्न पॉलिटिकल थॉट,* लिटिल ब्राउन, बॉस्टन्द्ध 1960।

पीटर लैसलेट और डब्ल्यू. जी. रंसीमन (संपा) *फिलॉसॉफी, पॉलिटिक्स ऐंड सोसायटी,* ब्लैकवैल, ऑक्सफोर्ड, 1957

जी.एच.सैबाइन, *व्हॉट इज़ पॉलिटिकल थ्योरी,* जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स, (1), पृष्ठ 1–16, 1939।

डब्ल्यू.इ.फॉनॉली, *द टर्मज़ ऑफ पालिटिकल डिसकोर्स,* प्रिंस्टन यूनिवर्सिटी प्रेस, प्रिंस्टन, 1983।

डेविड मिलर (संपा), *द ब्लैक्वैल ऐंन्साइक्लोपीडिया ऑफ पॉलिटिकल थॉट*, ऑक्सफोर्ड, ब्लैक्वैल, 1987।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखें भाग 4.2

बोध प्रश्न 2

1) देखें उप-भाग 4.4.2 और 4.4.3

बोध प्रश्न 3

1) देखें उप-भाग 4.4.4